आर.के.वी.वाई. परियोजनाः– पशु आहार प्रौद्योगिकी एवं गुणवत्ता परियोजना

स्थान : स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर, राजथान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजुवास), बीकानेर

उद्देश्य

1. पशु आहार के तकनीकी ज्ञान का प्रशिक्षण देना, जाग्रति करना।
2. प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन के जरिये पशु आहार की गुणवत्ता एवं खाद्य मानको का ज्ञान देना।
3. तकनीकी ज्ञान का विस्तार पशु पालक की जडो तक करना जिससे ग्रामीण युवा उसे अपना कर स्वरोजगार प्राप्त कर सके।
4. तकनीकी मांड्यूल तैयार कर उसकी जानकारी प्रदान करना जिससे विषम परिस्थितियॉ जैसे अकाल एवं सूखे से पशुधन को कैसे बचाया जा सके।

कार्यविधि

क्रमांक	गतिविधियॉ	
1.	पशु आहार रोजगार व कार्य कुशलता हेतु आहार संयंत्र इकाई की स्थापना	पैलेट आहार, सम्पूर्ण आहार ईंट, यूरिया मोलासिस खनिज ईंट, चैफ कटर, फिड ग्राईडर, फिड मिक्सचर आदि उपकरण प्रायोगिक खोज व प्रशिक्षण के उद्देश्य हेतु कार्य में लिये जाते है।
2.	क्षमता संवर्धन (प्रशिक्षण)	लाभान्वित श्रेणी :– किसान, पशुचिकित्सा अधिकारी, पशुधन सहायक, बेरोजगार युवा ग्रामीण महिला, कृषि विज्ञान केन्द्र विज्ञानिक व स्वयं सेवी कार्यकर्ता।
3.	गुणवत्ता परिक्षण	पशु आहार के नमूने एकत्रित इनका विषाक्ता परिक्षण व पोषक तत्वों को परिक्षण किया गया।
4.	जागृति हेतु प्रकाशन	तकनीकी फोल्डर व 4 प्रशिक्षण मनुअल प्रकाशित किये गये।

परिणाम

इस परियोजना के परिणामस्वरूप ग्रामीण महिलाएं, किसान, पशुचिकित्सा अधिकारी, पशुधन सहायक, बेरोजगार युवक को संतुलित आहार, पशु आहार प्रोद्योगिकी एवं गुणवत्ता के संबंध में प्रशिक्षण देकर उनकी पशु आहार से संबंधित जागरूकता को बढ़ावा दिया। इस परियोजना के द्वारा पशुओं की उत्पादकता एवं किसानों की अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिति में सुधार किया गया। परियोजना के प्रारम्भ से अब तक दिसम्बर, 2014 तक लाभान्वित प्रशिक्षुओं की संख्या 987 है। ये प्रशिक्षुक शुष्क, अर्द्धशुष्क और आर्द्र कृषि क्षेत्रों के 21 जिलों जैसे जयपुर, अलवर, दौसा, सीकर, झुनझुनू, धौलपुर, करौली, जोधपुर, सिरोही, जैसलमेर, हुनमानगढ़, चूरू, श्री गंगानगर, कोटा, बारां, झालावाड़, अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, बूंदी, अहमदाबाद, नागपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर, डूंगरपुर, नागौर, बीकानेर एवं पाली से है। इस परियोजना प्रशिक्षण द्वारा विशेषकर ग्रामीण नवयुवको का कौशल विकास किया गया ताकि वे पशु आहार प्रौद्योगिकी के नवाचार को अपनाकर स्वरोजगार की तरफ आकर्षित होवें तथा पशुपालकों व इस क्षेत्र में कार्यरत पशु चिकित्सक एवं अन्य पशु पालन क्षेत्र से जुड़े कार्मिकों को पशु पोषण के क्षेत्र में हुए नवाचारों, संतुलित आहार, गणवत्ता का प्रशिक्षण देकर उनके कौशल को बढ़ाया।